सुर अनेक पर राग एक

अनेकतावाद पर कुछ विचार

कमला भसीन

सुर अनेक
पर राग एक

अनेकतावाद पर कुछ विचार

कमला भसीन

सुर अनेक पर राग एक

प्रथम संस्करणः अक्टूबर 2012

केवल सीमित वितरण के लिए

Sangat

A Women's Resource Centre

A South Asian Feminist Network

जागोरी/संगत

बी-114, शिवालिक

मालवीय नगर

नई दिल्ली - 110 017

फ़ोनः +91 11 26691219/20; 26692166, 26691637

हेल्पलाइनः +91 11 26692700

ईमेलः jagori@jagori.org; sangat@sangatsouthasia.org

वेबसाइटः www.jagori.org; www.sangatsouthasia.org

चित्र व रूपांकनः तारा गोस्वामी

मुद्रणः सिस्टम्स विज़न

systemsvision@gmail.com

इस पुस्तक की इबारत एवं चित्रों का इस्तेमाल, प्रकाशन अथवा उनमें किसी प्रकार का संशोधन बिना लेखक एवं चित्रकार की अनुमति के नहीं किया जा सकता।

सुर अनेक पर राग एक

अनेकतावाद पर कुछ विचार

कमला भसीन

चित्र व रूपांकनः तारा गोस्वामी

हमारी दुनिया बहुरंगी, बहुरूपी है

सब तरफ़ अनेकता विराजमान है

ज़िन्दा रहने और पनपने के लिए प्रकृति को अनेकता चाहिए। अलग–अलग जलवायु, अलग मौसमों में तरह–तरह के पेड़, पौधे, लताएं पनपती हैं। क़िस्म–क़िस्म की सब्ज़ियां, फल, फूल, मेवे। अनेकों कीड़े–मकौड़े, तितलियां, मछलियां, चिड़ियां, जानवर। सब एक दूसरे से जुड़े। सबकी अपनी ख़ासियत, अपनी जगह, अपना किरदार।

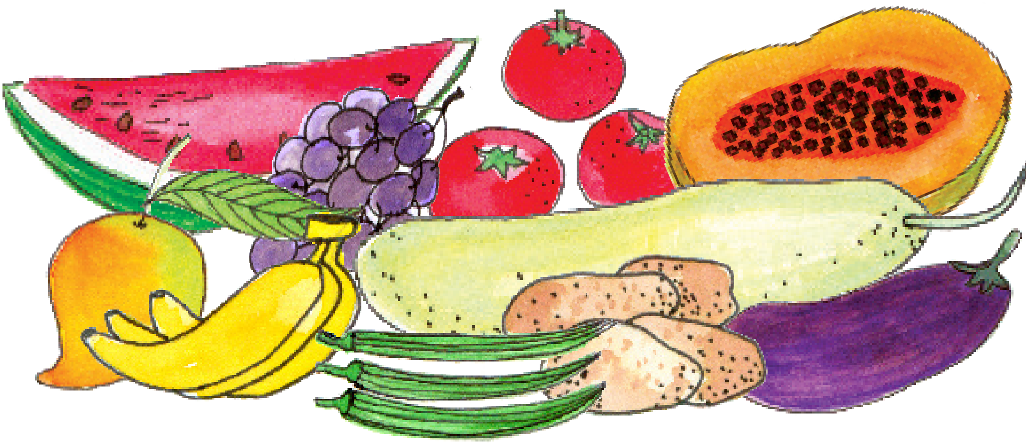

जैसे प्रकृति में अनेकता है, वैसे ही मानव समाज में भी अनेकता है। अलग जलवायु की वजह से हमारे रंग अलग हैं। काला, सांवला, मटमैला, पीला, सफ़ेद आदि। हमारी पोशाकें अलग हैं। सर्द जगहों की फ़र्क़, गर्म जगहों की फ़र्क़। जलवायु और तापमान के हिसाब से हमारे घर, काम–धंधे, जीने के रंग–ढंग फ़र्क़ हैं।

जलवायु, ज़रूरत और पसंद के हिसाब से हमारा खाना–पीना भी अलग–अलग है। कोई चावल से बना इडली, डोसा खाते हैं, कोई गेहूं से बने नान, रोटी, परांठे। कोई पास्ता पसंद करता है तो कोई नूडल्स। कोई मांस, मछली के बिना जी नहीं पाते, कोई इन्हें नहीं खाते। कोई आम, अनानास, खरबूज़ा, तरबूज़ का मज़ा लेते हैं, तो कोई सेब, आड़ू, चैरी और बेरीज़ का।

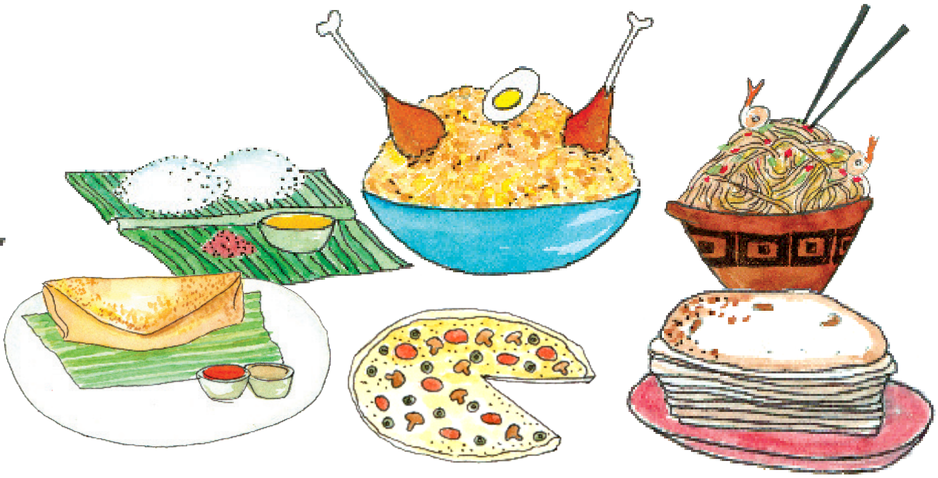

हमारे रंग, नैन–नक्श, क़द ओर वज़न तो फ़र्क हैं ही, हम सबकी क़ाबलियत और हुनर भी एक जैसे नहीं हैं। बहुत से लोग ठीक से या बिल्कुल नहीं देख पाते, पर वे सुन और छूकर बहुत कुछ समझ–परख लेते हैं। बहुत से लोग सुन–बोल नहीं पाते। हम में से कई के हाथ या पैर नहीं हैं या वे ठीक से काम नहीं करते। बहुत से लोगों का दिमाग अलग ढंग से काम करता है।

हमारे जीवन और ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, अनेकों काम–धंधों की ज़रूरत है, सो कोई किसान है, कोई मज़दूर, कोई तेली, मोची, नाई, लोहार, कोई अध्यापक है तो कोई चिकित्सक, वकील, व्यापारी। कोई रिक्शा चालक, कोई नाव चालक तो कोई विमान चालक।

तौर–तरीक़ों, हाव–भाव, पसंद–नापसंद की, अनेकता की तो बात ही मत पूछो। इतनी अनेकता कि बताए न बने। किसी के लम्बे बाल, किसी के छोटे और किसी के एकदम ग़ायब। फिर दाड़ी–मूंछ की अनेकता देखो।

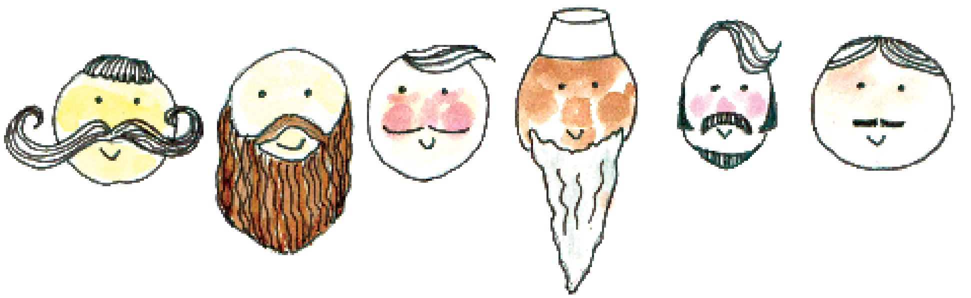

उधर कान, नाक छेदने और ज़ेवरों की भी अनेकता।

फिर किसी को गाना पसंद है, किसी को नृत्य, कोई किताबों में खोए रहते हैं तो कोई खेलों में मगन। किसी को खाना पकाने में आनन्द मिलता है और कोई रसोई के पास जाना पसंद नहीं करते। कोई सुबह–सुबह उठना पसंद करते हैं तो किसी को सुबह जल्दी उठना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।

हमारी इस अनेकता से भरी, रंग–बिरंगी दुनिया में, अपने रंग–ढंग लिए मुख़्तलिफ़ धर्म और सम्प्रदाय हैं– कोई प्रकृति के पुजारी हैं, कोई हिन्दू हैं, कोई मुसलमान, कोई सिक्ख, कोई ईसाई, कोई जैन, कोई बुद्ध, कोई ज़रतुश्ती या पारसी, कोई बहाई। धर्मों के अन्दर भी अनेकता है। हर धर्म में अनेक सम्प्रदाय और मत। जैसे इस्लाम में शिआ, सुन्नी, इस्मायली, बोहरा आदि। हिन्दू धर्म में शिव, कृष्ण, राम, काली, दुर्गा, हनुमान आदि को पूजने वाले लोग। सबकी पूजा करने के तरीक़े भी अलग–अलग।

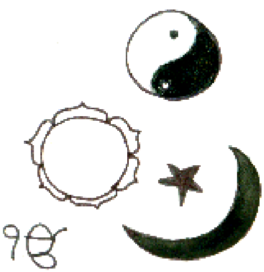

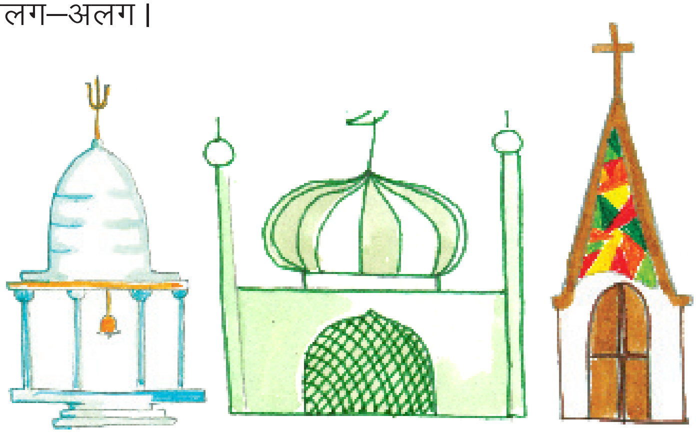

जहां करोड़ों लोग धर्म को मानते हैं, वहीं करोड़ों नास्तिक हैं। वे किसी धर्म को नहीं मानते। इन्सानियत ही उनका धर्म है।

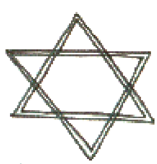

अनेकता का अन्त नहीं। हमारे चारों तरफ़ इतनी अनेकता है कि यह कहना मुश्किल है कि सामान्य या नॉर्मल क्या है।

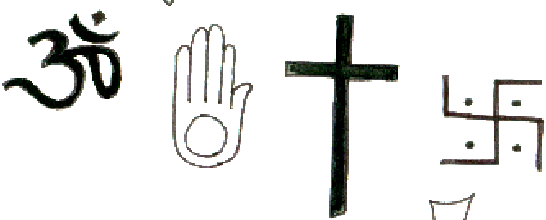

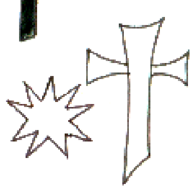

सहयोग ही जीवन है

कुदरत और इन्सानों के सहयोग से हमारा जीवन मुमकिन, आसान और सुन्दर बनता है। जी पाने के लिए हमें हवा, पानी, अन्न सूरज चाहिए। कुदरत के कितने प्राणियों और कितने इन्सानों के सहयोग से हम जी पाते हैं। मिसाल के लिए, हम जो आम खाते हैं– उस आम के उगने और हम तक पहुंचने में कितनी ऋतुओं, कितने प्राणियों का हाथ है। धरती, पानी, सूरज, खाद, कीड़े, मकौड़े, किसान, व्यापारी, ट्रक वाले, दुकानदार सबका योगदान है। हमारी ज़रूरत की हर चीज़ इतने ही सहयोग से बनती और हम तक पहुंचती है। इस चेन की हर कड़ी ज़रूरी और महत्वपूर्ण है।

इस दुनिया में कोई भी प्राणी एकदम स्व–निर्भर नहीं हो सकता। हमारा 'स्व' औरों के 'स्व' से जुड़ा है।

अनेकता आकर्षक भी है और ज़रूरी भी

अनेकता में एक आकर्षण सा है जो एकरसता/एकरूपता में नहीं है। हम जब रंग–बिरंगी चिड़िया या रंगों से भरे आसमान या सतरंगी इन्द्रधनुष को देखते हैं तो हम उसकी तरफ़ खिंचते हैं, उसे निहारना चाहते हैं।

विविधता सिर्फ़ मनमोहक ही नहीं, यह ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी है। अगर एक साल में अलग–अलग मौसम न हों तो ज़िन्दगी ख़त्म हो जाए। २४ घन्टे अगर सूरज चमकता रहे, एक जैसा खड़ा रहे तो, प्रकृति झुलस कर जल जाए। इसीलिए दिन के साथ रात ज़रूरी है। ज़िन्दगी के चलने के लिए प्राकृतिक विविधता ज़रूरी है। प्रकृति और ज़िन्दगी के इस चक्र में सबका अपना किरदार और योगदान है।

जैसे प्राकृतिक विविधता ज़रूरी है, वैसे ही इन्सानों में भी विविधता ज़रूरी है। अगर सब कवि हो गए तो विज्ञान का विकास कैसे होगा? सब किसान हो गए तो कपड़े, जूते, बर्तन कौन बनाएगा? सब नेता हो गए तो उनके पीछे कौन चलेगा?

अगर सब नाच, गाने, पोशाकें, घर, तौर–तरीक़े एक जैसे हो गए तो फिर सैर–सपाटों को कौन जाएगा? नया देखने, सुनने, महसूस करने को कुछ होगा ही नहीं। अगर हम रोज़ एक ही तरह का खाना खाएं तो नए–नए स्वादों का मज़ा कैसे लेंगे?

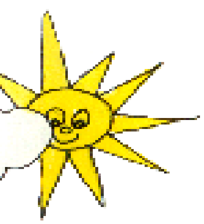

अगर पूरी दुनिया सिर्फ़ मैकडोनल्ड का खाना खाने और कोको कोला पीने लगे तो इडली–दोसा, पीज़ा और लस्सी का क्या होगा?

अब ज़रा यह सोचकर देखो कि अगर हमारी ज़िन्दगी में अनेकता न हो, सब कुछ एक जैसा हो, सब लोग एक जैसे हों तो कैसा लगेगा। सोचो, अगर–

गाने को हो बस इक गाना
बनाने को बस एक बहाना
एक तरह का ही हो खाना
हो एक ही राह पर सबको जाना।

हों एक ही जैसे पेड़ और फूल
एक से बच्चे एक से स्कूल
एक से कपड़े एक से चूल
सबके लिए हो एक ही रूल।

एक धरम को हम सब मानें
एक करम ही हम सब जानें
रंग एक ही हम पहचानें
सब इक नाम से लगें कहाने।

हों एक तरह के पंछी सारे
न चांद, न सूरज बस हों तारे
जीत न हो, हों हम सब हारे
आलोक न हो, बस हों अंधियारे।

बताओ, क्या चल सकेगी ऐसी इकरंगी दुनिया? अगर चल भी जाए तो लगेगी कैसी?

नीरस! बोरिंग!

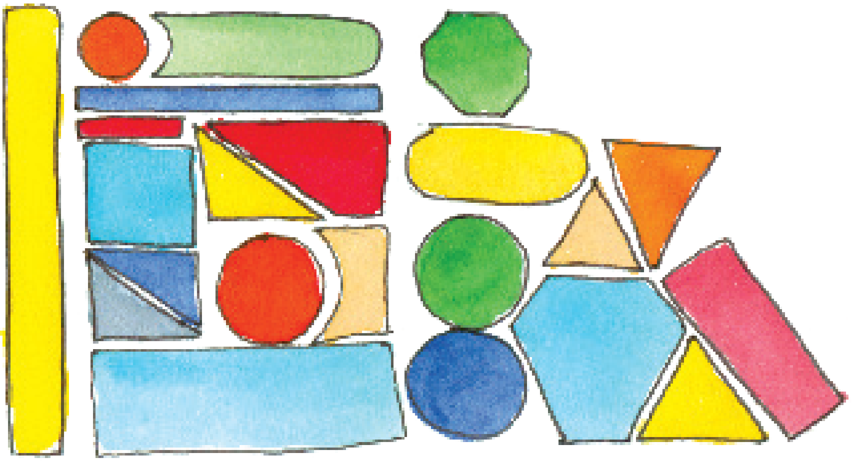

भेद का मतलब भेदभाव या ऊंच-नीच नहीं

भेद का अर्थ असमानता या ऊंच–नीच नहीं है। प्रकृति की अनेकता में कोई बहतर, कोई कमतर नहीं है। किसी का ज़्यादा, किसी का कम महत्व नहीं है। क्या हम कह सकते हैं। कौन बहतर है?

आग या पानी? चिड़िया, तितली या जानवर? चींटी, बिल्ली या हाथी? समुद्र या पहाड़ या घाटियां? रात या दिन? सर्दी, गर्मी, बरसात या बहार?

इसी तरह हमारे परिवार और समाज में भी कोई बहतर या कमतर नहीं है। सबका अपना स्थान और अपना महत्व है। मां का अपना, पिताजी का अपना, नाना–नानी, दादा–दादी का अपना और बच्चों का अपना।

जैसे सैंकड़ों तरह के पेड़, पौधों, पत्तों, फूलों से बगीचे खिलते हैं, सुन्दर लगते हैं, वैसे ही अनेकता से समाज चलते और पनपते हैं। प्रकृति ने केवल भिन्नता बनाई, उसने ऊंच–नीच या भेदभाव नहीं बनाए। प्रकृति ने नहीं कहा–फूलों में गुलाब उत्तम है, खनिजों में सोना उत्तम और मंहगा है, मनुष्यों में गोरे उत्तम हैं। भेद या भिन्नता को भेद–भाव या ऊंच–नीच में बदलने का काम इन्सानों ने किया। प्रकृति ने तो हमें

सब कुछ मुफ़्त में दिया। हमने उस पर अलग–अलग क़ीमत लगाकर भेद–भाव, ऊंच–नीच पैदा कर दिए।

अलग काम–धंधों को हमने वर्ग व्यवस्था और जाति व्यवस्था में बदल कर, ऊंच–नीच पैदा कर दी, ग़रीब–अमीर पैदा कर दिए, ब्राह्मण–शूद्र पैदा कर दिए, उत्तम–निम्नतम के फ़र्क़ पैदा कर दिए। प्रकृति ने अलग रंगों के मनुष्य बनाए, मनुष्यों ने नस्ल–भेद बना दिए। श्वेत–अश्वेत के बीच हर तरह की ऊंच–नीच बना दी।

अनेकता में मेल होने की जगह अलगाव पैदा हो गए। अनेकता में एकता होने की जगह अलगाव, पृथकता और बिखराव हो गया। अनेकता में छिपी एकता कहीं खो गई। यही वजह है कि आज चारों तरफ़ कलह, हिंसा और युद्ध है। हिंसा इतनी है कि जीवन और दुनिया ख़तरे में है। अगर हम सबकी इस एक पृथ्वी को बचाना है तो हमें मानना और मनवाना होगा कि–

अनेकता है तो हम हैं
हम हैं तो अनेकता है।

भेद बनाए अनेकता

मेल बनाए अनेकता में एकता

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था–

अनेक का परिचय – जहां भेद है

एक का परिचय – जहां मेल है।

रवि बाबू की बात को समझने के लिए हम अपने परिवार को ही देखें। परिवार में अनेक लोग हैं– छोटे–बड़े, कोई पढ़ती है, कोई नौकरी करता है, कोई रिटायर हो चुका है, कोई घर में ही काम करते हैं, कोई बाहर। यानी परिवार के सदस्यों में भेद है, अनेकता है। उनकी उम्र, रूप और स्वभाव अलग–अलग हैं। उनके व्यक्तित्व अलग–अलग हैं, पर अगर परिवार के अन्दर मेल है, प्यार है तो परिवार एक है। हम सब अलग–अलग होते हुए भी एक परिवार के सदस्य हैं।

यही है अनेकता में एकता। जैसे अनेक सदस्य पर एक परिवार, उसी तरह–

अनेक विद्यार्थी	एक कक्षा
अनेक कक्षाएं	एक स्कूल
अनेक पौधे फूल	एक बगीचा
अनेक नदी नाले	एक समुद्र
अनेक सम्प्रदाय	एक धर्म
अनेक देश	एक दुनिया

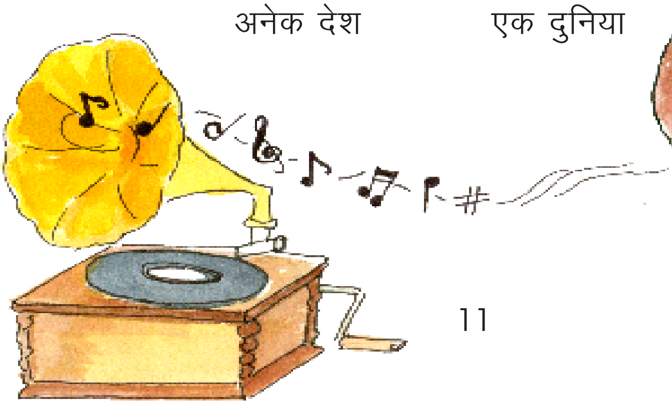

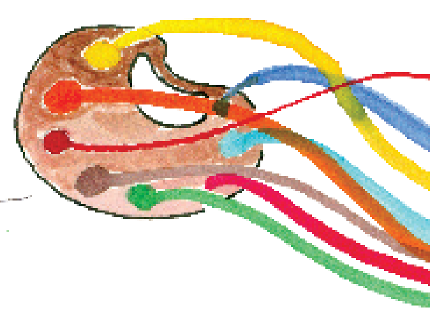

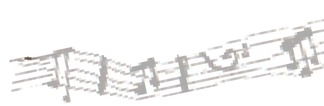

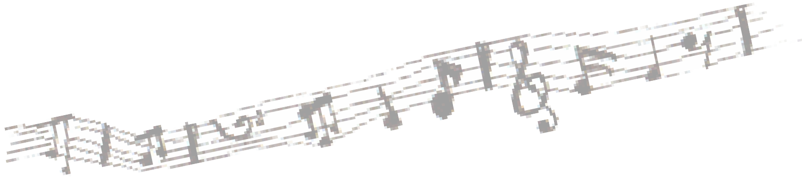

अनेकता में एकता तभी आती है जब मेल हो, आपसी समझ हो, एक दूसरे के लिए इज़्ज़त हो, प्यार हो। परिवार के सदस्य लड़ेंगे तो परिवार कैसे एक बचेगा? एक परिवार के अनेक हिस्से हो जाएंगे।

मेल भी तभी हो सकता है जब भेद हो। भेद नहीं होगा तो मेल कैसे होगा? अगर–अलग स्वर नहीं होंगे तो उनसे मिलकर राग कैसे बनेंगे, संगीत कैसे निकलेगा?

एक स्वर से राग नहीं बनते
एक रंग से चित्र नहीं बनते
और एक व्यक्ति से न परिवार बनते हैं, न समाज।

मनुष्य ने हमेशा अनेकता में एकता खोजने की कोशिश की है। इसी खोज और कोशिश से समाज बने। प्रकृति की अनेकता में एकता खोज कर विज्ञान के नियम बने।

जब हम मिलकर चलते हैं तब तेज़ी से आगे बढ़ सकते हैं। दो पड़ोसी या दो पड़ोसी देश अगर हमेशा एक दूसरे से झगडते़ रहें, तो दोनों परेशान और पिछड़े रहेंगे। भेद अगर भेद बने रहें तो वैषम्य और कष्ट पैदा होते हैं। भेद के मिलन से शक्ति, एकता, कल्याण, सौन्दर्य और सत्य का जन्म होता है।

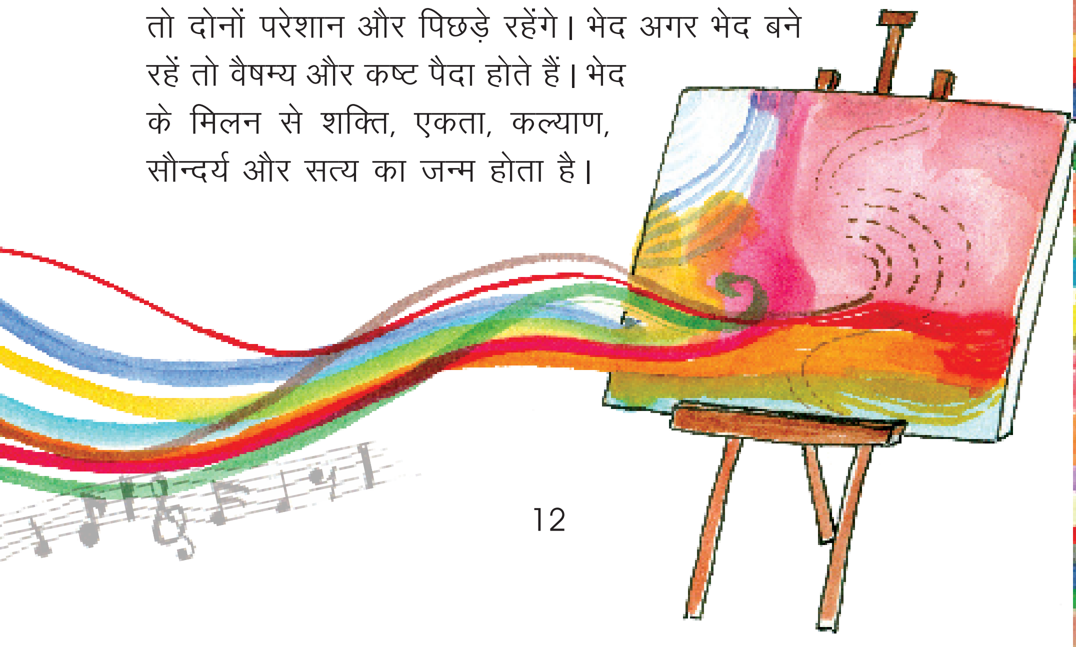

मिलन बिना अनेकता खतरे में

रवि बाबू ने एक छोटी सी मगर बहुत गहरी बात कही थी।

भेद के द्वारा 'अनेक' का जन्म होता है
किन्तु मिलन से 'अनेक' की रक्षा होती है।

अगर मिलन नहीं होगा तो अनेकता सुरक्षित नहीं होगी। वह ख़त्म हो जाएगी। मान लो हम पांच दोस्त हैं। हम अलग–अलग हैं, हमारे परिवार, भाषा, धर्म, स्कूल अलग–अलग हैं, पर हम दोस्त हैं। हम में प्यार और मिलन है। हम 'अनेक' हैं, पर एक साथ हैं, एक हैं। जिस दिन मिलन ख़त्म, उस दिन हम अनेक से एक रह जाएंगे। अलग, अकेले और कमज़ोर।

पर न्याय और समानता के बिना मिलकर रहना मुश्किल है। अनेकता में एकता तभी आ सकती है जब न्याय हो, समानता हो, एक दूसरे के बारे में समझ और इज़्ज़त हो। अन्याय और असमानता की वजह से वर्गों, जातियों और नस्लों के बीच कलह, द्वन्द्व और हिंसा होती रही है।

आजकल कई देशों में धर्म के नाम पर बहुत द्वन्द्व और हिंसा है। रोज़ कहीं न कहीं दंगे भड़कते हैं। धार्मिक असहनशीलता फैलाई जा रही है। तथाकथित धार्मिक लोग धर्म को राजनीति के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। धर्मों के बीच समझ, सद्भाव पैदा करने की जगह कलह पैदा कर

रहे हैं। इन दंगों में चाहे हिन्दू मरें या मुसलमान, मरते तो इंसान ही हैं। सम्पत्ति और रोज़गार चाहे सिक्ख का जले या ईसाई का, देश की सम्पत्ति और रोज़गार जलते हैं। नुक़सान देश का होता है। देश कमज़ोर पड़ता है। इसका पूरे मानव समाज पर असर पड़ता है।

अगर हिन्दुस्तान में हम मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों और सिक्ख़ों को अपनाएंगे नहीं, इज़्ज़त नहीं देंगे, तो क्या हिन्दू विदेश में सुरक्षित रहेंगे? आज कितने हिन्दुस्तानी यू.एस.ए. में रहते हैं। कल वहां धर्म या रंग के नाम पर इन्हें खदेड़ा जाए तो? लाखों हिन्दू, सिक्ख मध्य एशिया के मुस्लिम देशों में रहते हैं, मलेश्यिा में रहते हैं। धर्म के नाम पर क्या उनको खदेड़ा जाए? अगर यू.एस. सरकार हिंसा से दूसरे देशों पर नियंत्रण करेगी तो क्या यू.एस. नागरिकों का इन देशों में स्वागत होगा?

भेद बनाए अनेकता

मेल बनाए अनेकता में एकता

भारत में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की बात होती थी। हमारी मान्यता थी कि पूरी धरती एक परिवार है और हम सब उसके सदस्य हैं– पर आज नकली हिन्दुत्ववादी सिर्फ़ 'हिन्दू कुटुम्बकम' की बात कर रहे हैं। दुनिया वैश्वीकरण की खोज में है, पर ये संकीर्णता की तरफ़ जा रहे हैं। हर गांव और शहर में हिंसा फैला रहे हैं। पड़ोसियों को लड़वा रहे हैं। मिलन की जगह अलगाव पैदा करके, एकता ख़त्म कर रहे हैं।

ठीक इसी तरह मुस्लिम, ईसाई और अन्य कट्टरपंथी अलगाव और नफ़रत फैला रहे हैं। मानो नफ़रत करने और हिंसा फैलाने की होड़ लगी हो। कौन ज़यादा नफ़रत कर सकता है। कौन ज़यादा हिंसा फैला सकता है।

आज हिन्दू और मुसलमान लड़ रहे हैं। मगर एक बार असहनशीलता, हिंसा और 'दूसरे' को नकारने/घृणा करने की आग फैली तो रुकेगी नहीं। जिस राम–भक्त को आज मुसलमान नहीं पसन्द, कल उसे शिव या कृष्ण भक्तों से घृणा होगी, अन्य जातियों से परेशानी होगी। जिस सुन्नी–मुसलमान को आज हिन्दू नहीं भाते, कल वे ही शियाओं, बोहरा, वहाबियों से लड़ेंगे।

एक बार 'दूसरों' को नकारने, दबाने या मिटाने का खून मुंह पर लग जाता है तो फिर कोई नहीं बचता। ख़ासतौर से औरतें, उनकी अपनी पहचान और आज़ादी नहीं बचती। सब धार्मिक कट्टरवादी औरतों के चारों तरफ़ तरह–तरह की लक्ष्मण रेखाएं खींच देते हैं। उनकी पोषाकों व फ़ैसलों, घूमने–फिरने, पढ़ने–लिखने, नौकरी करने पर, धर्म और नैतिकता के नाम पर अधार्मिक पहरे बैठा देते हैं।

हम अगर गहराई से देखें तो पाएंगे कि पहचान की इन लड़ाइयों के पीछे लालच और सत्ता है। औरों को नकार कर, दबाकर उनकी ज़मीन–जायदाद, काम–धन्धों को हथियाने का लालच। उनकी सत्ता, संसाधन व रोज़गार हथियाकर उन पर नियंत्रण और राज करने का लालच।

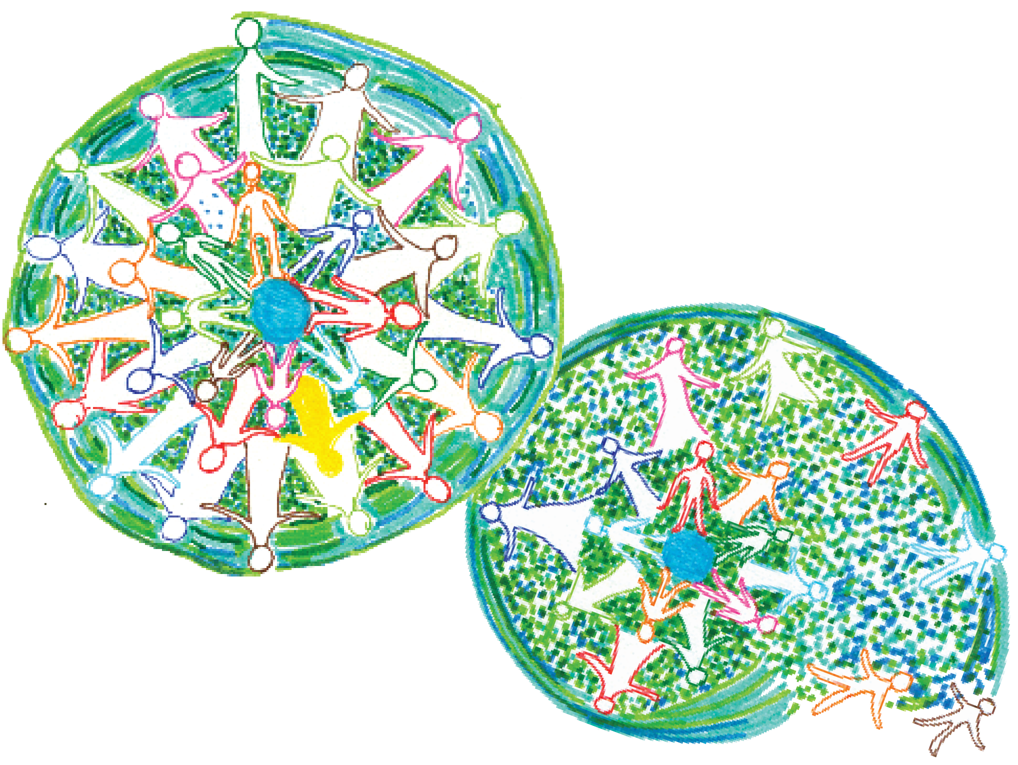

एक बार हमने समानता, इन्साफ़ और विविधता को नकारा, तो ये सिलसिला रुकेगा कैसे? फ़र्क़ तो अनेकों हैं– धर्मों के, राज्यों के, भाषाओं के, स्त्री–पुरुष के आदि आदि। विविधता को मिटाकर कैसे जीयेंगे हम? किस–किस को नकारेंगे, किस–किस से लड़ेंगे? कितनों को, कब तक नफ़रत और क़त्ल करेंगे?

चूंकि अनेकता के बिना जीना नामुमकिन है, इसलिए बहतर है अनेकता को समझना, अपनाना और पनपाना। अनेकता को अपनाए बिना हम सिकुड़ते चले जाएंगे। अपने आप को छोटा करते जाएंगे। यह हम पर है कि हम खुद को पहले इन्सान समझते हैं या हिन्दू, मुसलमान, ईसाई? हम खुद को विश्व का नागरिक समझते हैं या बंगलादेश, नाइजीरिया, चिली या जापान का? हम खुद को पहले हिन्दुस्तानी मानते हैं या गुजराती, पंजाबी, तमिल? खुद को पहले राजस्थानी मानते हैं या गूजर, जाट, राजपूत?

हमारा तो यह मानना है कि छोटे दिल वाले लोग ही अपनी संकरी पहचानें बनाते हैं। जिनके दिल बड़े हों, वे मिल–बांट कर रहना पसन्द करते हैं। बड़े दिल वाले 'मेरा–मेरा' नहीं करते। वे तो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' या सब सुखी रहें– सोचते और कहते हैं। इसीलिए सब आध्यात्मिक गुरुओं ने हमेशा औरों को अपनाने और भेदभाव मिटाने की बात की है। ग़ैरियत के पर्दों को हटाने की बात की है।

सिर्फ़ वे लोग जो सत्ता हथियाने वाली राजनीति खेलते हैं, संकरी पहचानें बनाकर लोगों को बांटते हैं। वे जाति, धर्म, भाषा के नाम पर राजनीति करते हैं और सत्ता में बने रहना चाहते हैं। हमारा तो मानना है कि जो बांटता है, नफ़रत और हिंसा फैलाता है वह धार्मिक हो ही नहीं सकता। करुणा, न्याय और प्यार करने वाले लोग ही धार्मिक हैं। बाक़ी पाखन्डी और इन्सानियत के दुश्मन हैं।

हमें लगता है सिकुड़ने से बहतर है फैलना। हम सब, पहले इन्सान पैदा होते हैं, उसके बाद हिन्दू, मुसलमान, बुद्ध, सिक्ख, बनाए जाते हैं। अपनी पहली, असली और फैली पहचान को छोड़ कोई छोटी क्यों पहचान अपनाई जाए? हम क्यों अपने आप को छोटी, सिकुड़ी, अलग पहचानों में बांधें?

भेद को समझना और अपनाना है

अनेकता हमें विरासत में मिली है, पर अनेकता बचेगी तभी जब हम उसको समझेंगे, उसकी हिफ़ाज़त करेंगे। अनेकता की हिफ़ाज़त में ही हम सब की हिफ़ाज़त है।

मैं अगर अपने से फ़र्क़ लोगों को न समझूं, न अपनाऊं, तो मुझे कौन समझेगी और अपनाएगी? मैं अगर अपने से फ़र्क़ लोगों का अपमान करती हूं, उनका मज़ाक उड़ाती हूं तो मेरे साथ भी तो यही होगा। एकदम, एक जैसा तो कोई नहीं है। परिवार में भी नहीं। इसलिए भिन्नता या फ़र्क़ को स्वीकारना ज़रूरी है। उसे बिना स्वीकारे जीना मुमकिन नहीं है।

भिन्नता को सहना या बर्दाश्त करना ही काफ़ी नहीं है। मान लो मुझे दिखाई नहीं देता। तुम अगर मेरे अन्धेपन को सिर्फ़ सह लो, या मेरा अपमान, मज़ाक न करो, यह काफ़ी नहीं है। हमारे मिलकर रहने के लिए यह ज़रूरी है कि तुम मेरे अन्धेपन को समझो। यह भी समझो कि मैं देख तो नहीं पाती, पर सुन बहुत अच्छा सकती हूं। यह भी समझो कि मेरा अन्धापन मेरी केवल एक पहचान है। इसके अलावा भी मैं बहुत कुछ हूं– लड़की हूं, विद्यार्थी हूं, गायक हूं, बहन हूं, बेटी हूं, नागरिक हूं।

देखने की शक्ति में तुम और मैं अलग हैं, पर बहुत सी बातों में हम एक हैं। हम दोनों इन्सान हैं, दोनों एक शहर और एक देश के रहने वाले हैं। इंसान होने के नाते हमारी ज़रूरतें (रोटी, पानी, हवा आदि) एक जैसी हैं। हम दोनों को प्यार और दोस्ती अच्छे लगते हैं, अपमान अच्छा नहीं लगता।

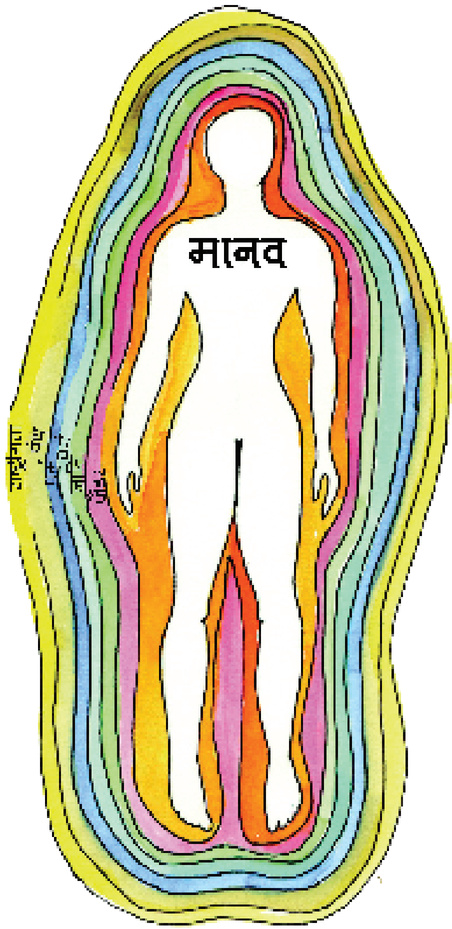

इसी तरह, तुम और मैं अगर अलग धर्मों को मानते हैं तो एक दूसरे के धर्मों को समझ सकते हैं, उनका आदर कर सकते हैं, उनसे कुछ नया सीख सकते हैं। हमारे धर्म अलग हैं, पर हमारी धार्मिकता एक सी हो सकती है। हम दोनों आस्तिक हैं, दोनों एक बड़ी शक्ति में विश्वास करते हैं, दोनों बहतर इन्सान बनना चाहते हैं। हमारे मिल बैठने के लिए, एक मोहल्ले में अच्छे पड़ोसी बनने के लिए इतनी सारी समानताएं हैं।

इस तरह की समझ से ही एक दूसरे के लिए इज़्ज़त, संवेदना पैदा होती है, मेल होता है और मिलन से हम भिन्न होते हुए भी एक साथ रह सकते हैं, एक दूसरे को शक्ति दे सकते हैं।

अनेकता में नयापन है, रस है। एक दूसरे से सीखने-सिखाने को है, लेने-देने को है। अनेकता में जीवन है।

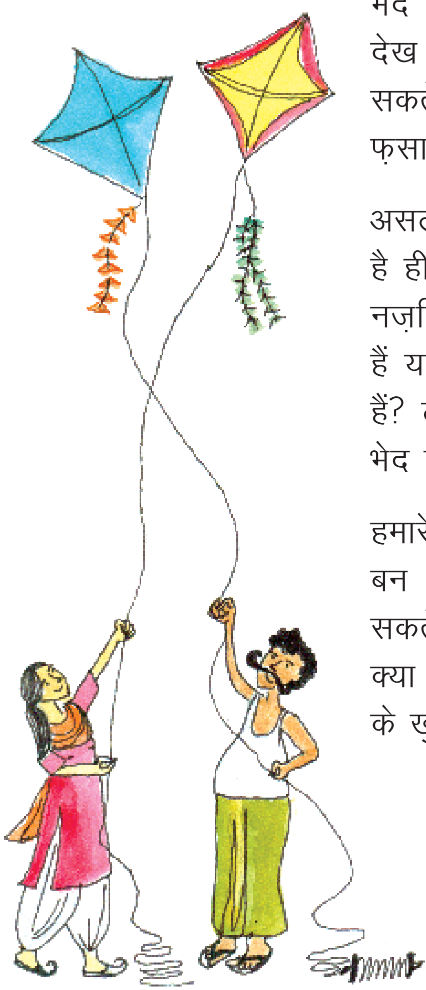

हम एक दूसरे में क्या देखते हैं, यह दूसरों पर नहीं हमारी मानसिकता पर निर्भर है। अगर भेद देखना चाहें तो अपने भाई बहन में भी देख सकते हैं, अपने पति या पत्नी में देख सकते हैं। तभी तो परिवारों में इतने झगड़े, फ़साद होते हैं।

असल में बात एक सा या अलग होने की है ही नहीं। बात है हमारी मानसिकता और नज़रिए की। हम मिलकर रहना पसंद करते हैं या अलगाव पसंद करते और पैदा करते हैं? लोगों को पास लाते हैं या उनके बीच भेद की दीवारें खड़ी करते हैं?

हमारे फ़र्क़ नफ़रत बन सकते हैं या आकर्षण बन सकते हैं। हमारे फ़र्क़, दीवारें भी बन सकते हैं, दरवाज़े भी। यह हम पर है कि हम क्या चाहते हैं, नफ़रत की दीवारें या दोस्ती के खुले आसमान।

सीमा और संयम के बिना अनेकता अराजकता है

अनेकता को बनाए रखने और पनपाने के लिए, एक दूसरे को समझने के साथ–साथ सीमा और संयम भी ज़रूरी है। जब परिवार, दफ़्तर या फ़ैक्टरी में हम अपनी सीमा, संयम और अनुशासन से व्यवहार करते हैं, तब हम में शक्ति और आभा होती है। जब हम अपनी मर्ज़ी से, बिना नियम के चलते हैं तो वही समूह भीड़ बन जाता है, धक्का–मुक्की होती है, लोग रौंदे जाते हैं।

ठीक यही हाल ट्रैफ़िक का होता है। अगर सब सीमा में, संयम से चलें तो सब आगे बढ़ सकते हैं, पर अगर हर 'एक' अपने ढंग से चले तो 'अनेक' आगे नहीं बढ़ सकते।

अनेकता तभी बचेगी जब 'एक' संयम बरतेगी/गा।
चांद, सूरज, तारे भी अनेकता बनाए हैं, क्योंकि वे
अपनी सीमा में नियम से चलते हैं।

हमारे व्यक्तित्व की और ख़ासियत की सुरक्षा तभी हो सकती है जब हम सब अनेकता की अहमियत समझें, औरों के व्यक्तित्व और ख़ासियत की उसी तरह इज़्ज़त और रक्षा करें जिस तरह हम अपनी इज़्ज़त और सुरक्षा चाहते हैं।

विविधता एक सौगात है, हमारी सम्पत्ति है, हमारी शक्ति है– चाहे यह विविधता परिवार में हो या दफ़्तर में, मुहल्ले में हो या शहर में।

हमेशा से हमारी ज़िन्दगी में अनेकता रही है, पर आज की दुनिया में अनेकता हमारी ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा बन गई है। केरल के एक छोटे शहर में उत्तर प्रदेश के 'भईये' और पंजाब के सिक्ख काम करते मिल जाएंगे। मालद्वीप के मुसलमान उसी मुहल्ले में मिल जाएंगे। दिल्ली, मुम्बई की कच्ची बस्तियों में पूरे देश के लोग मिल जाएंगे। एक बस्ती, अनेक समुदाय, भाषाएं, भोजन, धर्म। अलग–अलग लोग, पर सब गरीब, सब मेहनतकश, सब पेट पालने के लिए परदेस में रहते लोग।

आज टेलीविज़न घरों के अन्दर अनेकता ले आए हैं। पूरी दुनिया के कार्यक्रम एक डिब्बे में। अफ़गानिस्तान, ईरान, दुबई, रूस में लोग हिन्दुस्तानी फ़िल्में देखते हैं और उनके गाने गाते हैं। हिन्दुस्तानी बच्चे इंग्लिश गानों की धुनों पर झूमते हैं, विदेशी कपड़े पहनते हैं और विदेश में पढ़ने और काम करने के सपने देखते हैं।

आज यू.एस.ए. में लाखों की तादाद में हर धर्म के लोग रहते हैं। जैसे हिन्दुस्तान में सैकड़ों सालों से हज़ारों मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, गिरजाघर हैं, वैसे ही आज यू.एस.ए. में हैं।

विविधता का रक्षक है अनेकतावाद

आज की इस दुनिया में हमें सिर्फ़ अनेकता को नहीं अनेकतावाद को समझना और अपनाना होगा। सिर्फ़ विविधता का होना या उसे मान लेना अनेकतावाद को जन्म नहीं देता। विविधता को सक्रिय रूप से स्वीकारना, उसकी सुरक्षा करना और उसे अपनाना अनेकतावाद है।

'अनेकतावाद' का मतलब सिर्फ़ बर्दाश्त करना या सहनशीलता ही नहीं है। इसका मतलब आपसी समझ पैदा करना भी है। बर्दाश्त करना हमें इकट्ठे जीने दे सकता है, पर अच्छे पड़ोसी बनकर जीने के लिए यह काफ़ी नहीं है। दुश्मनी से सहनशीलता बेहतर ज़रूर है, पर यह हमारे विचारों को चुनौती देने के लिए नाकाफ़ी है।

सिर्फ़ सहनशीलता एक दूसरे के बारे में हमारे अज्ञान को भी दूर नहीं करती और न ही हमारे बीच लेन–देन, बातचीत और समझ पैदा करती है। बर्दाश्त हमें नया सीखने, समझने को भी नहीं कहती। सिर्फ़ सहने के लिए समझने की ज़रूरत नहीं है, पर अगर प्यार से मिलकर रहना है, एक–दूसरे को अपनाकर, एक–दूसरे की इज़्ज़त करते हुए इकट्ठे रहना है तब हमें एक–दूसरे को समझना होगा।

अनेकतावाद का मतलब है–अनेकता में विश्वास, अनेकता का आदर, अनेकता की हिफ़ाज़त करने और उसे पनपाने का संकल्प।

अनेकतावाद यानी यह मान्यता कि जैसे नदियों के मिलने से पानी के पवित्र संगम बनते हैं, वैसे ही अलग–अलग धर्मों के मिलने से सांस्कृतिक संगम बनते हैं।

अनेकतावाद यानी यह विश्वास कि धर्म के नाम पर झगड़े अधार्मिक हैं। मज़हब या धर्म का मतलब ही है–मेल, मिलन, प्रेम, करुणा।

साथ मिलकर रहना इन्सानियत पनपाता है

फ़र्क़ को समझते हुए, उसे अपनाते हुए, मिलकर जीने की कोशिश हमें बहतर इन्सान बनाती है। अनेकता में जीने से हमारी सहनशक्ति बढ़ती है, हमारे अन्दर संवेदना या हमदर्दी पैदा होती है। हमारी खुदगर्ज़ी कम होती है। जब हम औरों के साथ रहते हैं तो हमें खुद को भी समझना पड़ता है। अपनी प्रतिक्रियाओं, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा की भावना, सबको समझकर, क़ाबू में करके हम औरों के साथ मिलकर रह सकते हैं। अपने अहम् को ही पकड़े रहें, केवल अपनी ही भावनाओं, विचारों को समझें तो हम अनेक नहीं हो सकते। एक ही बने रहेंगे।

अनेकतावाद का अर्थ भिन्नता को मिटाना नहीं, पनपाना है

कुछ लोगों का मानना है कि अनेकता में एकता लाने के लिए हमें अपने फ़र्क़ और विशेषताएं मिटानी होंगी या मिटा देनी चाहिएं, लेकिन हमारी नज़र में एक साथ मिलकर रहने के लिए भिन्नताओं और विशेषताओं को मिटाना ज़रूरी नहीं है और शायद मुमकिन भी नहीं है। अलग नस्ल या जाति के लोग अपनी पहचान कैसे मिटा सकते हैं? स्त्री–पुरुष कैसे शारीरिक फ़र्क़ मिटा सकते हैं? मिलकर रहने के लिए हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, क्या अपने धर्म छोड़ सकते हैं या छोड़ेंगे?

मिलकर रहने का अर्थ यह नहीं है कि एक हांडी में डाल कर सबको इतना पकाओ और गलाओ कि सब की खिचड़ी बन जाए और किसी की भी अपनी अलग पहचान न रहे।

अनेकतावाद का अर्थ औरों को अपने अन्दर आत्मसात करना या खुद को औरों में आत्मसात करके अपनी पहचान को ख़त्म करन बिल्कुल नहीं है। इस तरह का मिलन, मिलन नहीं, मरण है। भला बगीचे के सब फूलों, पौधें, रंगों को मिला कर, उनके भेद मिटाकर, एक बनाने का सोचा भी जा सकता है? तौबा!

इस तरह का मिलन जनतन्त्र के भी ख़िलाफ़ है। अपनी पहचान बनाए रखना हरेक का मानवीय अधिकार है।

हमारी नज़र में, अनेकता में एकता ऐसी होनी चाहिए जैसे किसी सुन्दर राग के स्वर। छोटे से छोटा स्वर भी कायम रहता है, अपनी विशेषता लिए रहता है, पर राग का हिस्सा होता है। अगर हर स्वर की विशेषता ही मिट जाए तो राग कैसे बनेगा?

अनेकता में एकता वैसी हो जैसे बगीचे के फूल। सबके अलग रंग, रूप, खुशबू मिलाकर सुन्दर बगिया बनती है। इन्सानों में अनेकता में एकता वैसी हो जैसे एक बस्ती में अलग धर्मों, भाषाओं, रंगों के लोग मिलकर रहते हैं। सब अपने धर्म मानते हैं, पर दूसरों के धर्मों की इज़्ज़त करते हैं। सब अपने काम–धंधें करते हैं, पर दूसरे काम–धंधों की ज़रूरत समझते हैं।

अनेकतावादी संस्कृति भेदों और विशेषताओं का मिलन और आमना–सामना है, उनका मिटकर एक हो जाना नहीं है।

अनेकतावाद का साथी है संवाद

अनेकतावाद संवाद की नींव पर खड़ा होता है। संवाद का मतलब है मिलकर, एक–दूसरे को समझते हुए बात करना। असली संवाद दो तरफ़ा या बहुमुखी होता है। असली संवाद समानता या बराबरी पर आधारित होता है। अगर एक व्यक्ति ही बोलता रहे और एक व्यक्ति के विचार ही औरों पर हावी हों तो यह संवाद नहीं है। यह वर्तालाप नहीं एकालाप है। असली संवाद में हम सिर्फ़ कानों से नहीं दिल से सुनते हैं। सिर्फ़ सुनते ही नहीं समझते हैं। भेदभाव दूर करके अच्छे रिश्ते बनाने की कोशिश करते हैं। असली संवाद में हम एक दूसरे की विशेषताओं को समझते ही नहीं उनकी इज़्ज़त करते हैं। भिन्नता और विशेषता को समझना उतना ही ज़रूरी है जितना अपनी एकरूपता, समानता को समझना।

असली संवाद अलग–अलग विचारों और मान्यताओं के बीच बहस नहीं है। असली सम्वाद तो सत्य खोजने का प्रयास है। यह खुले दिलों के बीच की बातचीत है, जहां हम खुद को, अपने विचारों, मान्यताओं को बदलने को भी तैयार हैं। सम्वाद हमें समझ के नए स्तर पर ले जाता है। सम्वाद परस्पर रूपान्तरण है। असली सम्वाद के बाद कुछ नया घटता है, हम आगे बढ़ते हैं, ऊपर

उठते हैं। कट्टरता, सख्ती छोड़ हम तरल बनते हैं। औरों में घुल–मिल जाने की हमारी इच्छा और शक्ति बढ़ती है।

धार्मिक सम्वाद का अर्थ है अन्य तीर्थ यात्रियों को समझना। यह समझना है कि उनकी यात्रा का मक़सद क्या है? उनकी मंज़िल कहां है? उनके विश्वास की रगों को कौन और क्या सींचता है? उनके मूल्य और मान्यताएं क्या हैं? एक साथ रहने के लिए यह सब जानना ज़रूरी है।

सम्वाद का एक मक़सद और है–एक–दूसरे को समझने और रूपान्तरित करने के साथ–साथ मिलकर अपने आसपास को बदलना, ताकि हम मानवीय मूल्यों की नींव पर खड़े समाज बना सकें।

अगर हम बहुत से लोग अनेकतावाद को मानें, उसे स्वयं जीएं और उसे पनपाने के लिए कटिबद्ध हों तो ऐसी दुनिया नामुमकिन नहीं है, जहाँ सद्भाव, शान्ति और प्यार हो। अगर हम सब अमन और इन्साफ़ का सपना देखें तो यह सपना ज़रूर साकार हो सकता है।

कमला भसीन नारीवादी कर्मी, लेखक, गीतकार प्रशिक्षक हैं। 1970 से वे सतत विकास, सामाजिक लैंगिक समानता मानव अधिकार व अमन के लिए काम कर रही हैं। इनकी कर्म भूमि दक्षिण एशिया है। 1975 से 2002 तक कमला भसीन ने संयुक्त राष्ट्र संघ में रह कर ये सब काम किए। कमला भसीन संगत, जागोरी,

चित्र व रूपांकनः तारा गोस्वामी